

भूपेन हज़ारिका के गीत-साहित्य पर आधारित अध्ययनों की समीक्षात्मक समीक्षा

D. Parijatha Kusuma Devi *

Research Scholar, Ph.D. in Hindi, Bir Tikendrajit University, Imphal, Manipur, India.

Dr. Bina Sharma **

Supervisor, Department of Hindi, Bir Tikendrajit University, Imphal, Manipur, India.

*Corresponding Author Email: kusumadevi231212@gmail.com

सारांश

यह शोध भूपेन हज़ारिका के गीत-साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसमें विशेष रूप से मानवीय मूल्य, सांस्कृतिक एकता और पूर्वोत्तर भारत की क्षेत्रीय पहचान के आयामों को विश्लेषित किया गया है। हज़ारिका के गीतों में मानवता, करुणा, समानता और सामाजिक न्याय की सशक्त अभिव्यक्ति दिखाई देती है। उनके गीत "मानुष मानुषर जने" जैसी रचनाएँ विश्व-बन्धुत्व का संदेश देती हैं, जबकि "गंगा से ब्रह्मपुत्र" सांस्कृतिक विविधताओं के बीच सेतु का कार्य करती है। उनके गीत-साहित्य में पूर्वोत्तर भारत के जनजीवन, लोकसंस्कृति, संघर्ष और अस्मिता का जीवंत चित्र उभरता है, जिससे क्षेत्रीय पहचान को राष्ट्रीय स्तर पर स्थान मिलता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भूपेन हज़ारिका का संगीत केवल कलात्मक सृजन नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक समरसता और मानवीय आदर्शों का सशक्त माध्यम है। उनकी रचनाएँ आज भी एकता, मानवता और सांस्कृतिक गौरव को प्रेरित करती हैं।

मुख्य शब्द: मानवीय मूल्य, सांस्कृतिक एकता, क्षेत्रीय पहचान, भूपेन हज़ारिका

1. परिचय

भारतीय संगीत-जगत में भूपेन हज़ारिका का नाम एक ऐसे सृजनशील कलाकार के रूप में लिया जाता है, जिनकी रचनाओं में मानवता, सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक एकता और क्षेत्रीय अस्मिता का अद्भुत सामंजस्य दिखाई देता है। असम की लोकसंस्कृति और पूर्वोत्तर भारत की विविध सामाजिक परंपराएँ उनके काव्य और गीतों में गहराई से अभिव्यक्त होती हैं। हज़ारिका केवल गायक भर नहीं थे; वे कवि, विचारक, लोकशिक्षक और सामाजिक चेतना के प्रवर्तक भी थे। उनकी रचनाओं में मानव जीवन की वेदना, संघर्ष, आशा, सामूहिक एकता और मानवीय करुणा का स्वर निरंतर प्रवाहित होता है।

भूपेन हज़ारिका के गीत मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि मानते हैं। “मानुष मानुषर जने” जैसे गीत मनुष्य के मनुष्य से जुड़ाव और सहानुभूति पर आधारित समाज की संकल्पना प्रस्तुत करते हैं। उनके गीतों में किसी भी प्रकार के भेदभाव, हिंसा या दमन का विरोध मिलता है। इसी प्रकार उनकी रचनाओं में सांस्कृतिक एकता का दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक है। वे मानते थे कि भाषा, जाति और क्षेत्र की विविधताएँ बाधा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की शक्ति हैं। उनके गीत “गंगा से ब्रह्मपुत्र” जैसी रचनाएँ पूरे भारत को एक साझा सांस्कृतिक धारा में जोड़ती हैं।

पूर्वोत्तर भारत की क्षेत्रीय पहचान भूपेन हज़ारिका के गीत-साहित्य का एक महत्वपूर्ण आधार है। उन्होंने इस क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि, जन-जीवन, प्रकृति, संघर्ष और उपेक्षा को स्वर देकर मुख्यधारा में प्रतिष्ठित किया। उनके गीत इस बात का प्रमाण हैं कि कला केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता और सांस्कृतिक पहचान का सशक्त माध्यम भी है। इस अध्ययन का उद्देश्य हज़ारिका के गीत-साहित्य में निहित मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक समरसता और पूर्वोत्तर की विशिष्ट पहचान का समीक्षात्मक विश्लेषण करना है, ताकि उनके रचनात्मक अवदान और सामाजिक दृष्टि को और अधिक गहराई से समझा जा सके।

2. भूपेन हज़ारिका द्वारा लिखी गई गीत-साहित्य से संबंधित पुस्तकें

“डॉ. भूपेन हज़ारिका गीत-समग्र” भूपेन हज़ारिका के संपूर्ण गीत-साहित्य का अधिकृत और विस्तृत संकलन है, जिसमें उनके द्वारा रचित असमिया, बंगाली और हिंदी गीतों को एकत्रित किया गया है। यह पुस्तक भूपेन हज़ारिका की रचनात्मक यात्रा, मानवीय दृष्टि और सांस्कृतिक चेतना का सार प्रस्तुत करती है। गीत-समग्र में संग्रहीत गीतों में मानवता, प्रेम, समानता, करुणा, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक एकता जैसी मूलभूत भावनाएँ प्रबल रूप में उभरती हैं। हज़ारिका के गीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज के प्रति गहरी संवेदना और समय-चेतना के दर्पण हैं। इस पुस्तक में ऐसे कई गीत शामिल हैं जो पूर्वोत्तर भारत विशेषकर असम की लोकसंस्कृति, जनजीवन, संघर्ष, मूल्यों और प्राकृतिक सौंदर्य का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं। “गंगा से ब्रह्मपुत्र” जैसे गीतों में सांस्कृतिक संगम की व्यापक दृष्टि झलकती है, जबकि “मानुष मानुषर जने” जैसे गीत विश्व-मानवता और सामाजिक समानता का संदेश देते हैं। इन गीतों में मजदूरों, किसानों, नाविकों, बुनकरों, जनजातीय समुदायों और आम लोगों के जीवन की कठिनाइयाँ बड़ी संवेदनशीलता से अभिव्यक्त हुई हैं। पुस्तक इस बात को स्पष्ट करती है कि भूपेन हज़ारिका का गीत-साहित्य सामाजिक संवाद, सांस्कृतिक संरक्षण और मानवतावादी विचारधारा का सशक्त माध्यम है। उनकी रचनाएँ परंपरा और आधुनिकता के बीच पुल का कार्य करती हैं तथा पूर्वोत्तर भारत की अस्मिता को राष्ट्रीय पहचान से जोड़ती हैं। इस प्रकार, “डॉ. भूपेन हज़ारिका गीत-समग्र” न केवल एक गीत-संग्रह है, बल्कि भारतीय समाज, संस्कृति और मानवीय मूल्यों का गहन अध्ययन प्रस्तुत करने वाला मौलिक सांस्कृतिक दस्तावेज भी है।

2.1 माँय एटी जाजाबोर

“माँय एटी जाजाबोर” भूपेन हज़ारिका द्वारा लिखी गई एक महत्वपूर्ण और आत्मकथात्मक प्रकृति की रचना है। “जाजाबोर” का अर्थ है यायावर, अर्थात् वह व्यक्ति जो निरंतर यात्रा में रहता है और भूपेन हज़ारिका इस शीर्षक के माध्यम से अपने ही जीवन-दर्शन, अनुभवों और रचनात्मक यात्रा का प्रतीकात्मक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

यह पुस्तक भूपेन हज़ारिका के व्यक्तिगत जीवन, यात्राओं, संघर्षों, सांस्कृतिक अनुभवों, और संगीत-रचना की प्रक्रिया को अत्यंत संवेदनशील और जीवंत ढंग से व्यक्त करती है। वे अपने जीवन की घटनाओं को केवल आत्मवृत्त के रूप में नहीं लिखते, बल्कि उन्हें एक सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में रखते हैं। उनके लेखन में मानवता, समानता, सांस्कृतिक एकता और सामाजिक न्याय की गहरी चेतना है जो उनके गीतों में भी दिखाई देती है।

पुस्तक में असम, पूर्वोत्तर भारत और अन्य प्रदेशों में उनकी यात्राओं के अनुभव न केवल भूगोल का, बल्कि मानव मन, समाज और संस्कृति का गहन अध्ययन प्रस्तुत करते हैं। वे बताते हैं कि कैसे लोकजीवन, लोकगीत, नदियाँ, श्रमिक, नाविक, जनजातीय समुदाय और आम जनता ने उनकी रचनात्मकता को प्रेरित किया। पुस्तक में उनकी गीत-प्रेरणाओं, संघर्षों, सामाजिक सरोकारों और विश्वदृष्टि का सुंदर संगम मिलता है। “मॉय एटी जाजाबोर” यह भी दिखाती है कि भूपेन हज़ारिका के लिए कला कोई भिन्न संसार नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का साधन थी। उनकी लेखनी में प्रेम, पीड़ा, संघर्ष, करुणा और आशा की अनुभूति एक साथ उपस्थित रहती है। यह पुस्तक एक कलाकार की आत्मा, संवेदना, यात्राओं और विचारधारा का प्रतिबिंब है। पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक पहचान तथा मानवीय मूल्यों को समझने के लिए यह रचना अत्यंत उपयोगी है।

यायावर जीवन और आत्मअन्वेषण: भूपेन हज़ारिका स्वयं को “जाजाबोर” यानी यायावर कहते हैं। पुस्तक में उनके निरंतर यात्रा-जीवन, अनुभवों और उन यात्राओं के माध्यम से हुई आत्म-खोज का विस्तृत चित्रण मिलता है। वे बताते हैं कि उनकी यात्राएँ उन्हें नए लोगों, संस्कृतियों और विचारों से जोड़ती रहीं।

मानवता और सामाजिक संवेदनाएँ: यह पुस्तक भूपेन हज़ारिका की मानवतावादी सोच को गहराई से व्यक्त करती है। वे गरीबों, मजदूरों, नाविकों, किसानों, जनजातियों और आम लोगों के संघर्षों को महसूस करते हैं और यही संवेदना उनके गीतों में रूपांतरित होती है। उनके विचार सामाजिक न्याय, समानता और करुणा पर आधारित हैं।

असम और पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक पहचान: पुस्तक में असम और पूर्वोत्तर के लोकजीवन, लोकगीत, नदियाँ, पर्व, रीति-रिवाज़, समुदायों और संघर्षों का वर्णन है। इससे पता चलता है कि उनकी रचनात्मक दुनिया पर क्षेत्रीय संस्कृति का गहरा प्रभाव था। यह विषय आपके शोध में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

संगीत-यात्रा और रचनात्मक प्रक्रिया: भूपेन हज़ारिका बताते हैं कि उनके गीत कैसे जन्म लेते हैं। वे लोकधुनों, सामाजिक घटनाओं, जीवन के उतार-चढ़ाव और जनता के अनुभवों से प्रेरणा लेते हैं। यह पुस्तक उनकी रचनात्मकता का आंतरिक पक्ष उजागर करती है।

सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ का चित्रण: पुस्तक में गरीबी, विस्थापन, श्रम, जातीय मुद्दों और सामाजिक असमानताओं का उल्लेख है। वे इन्हें आलोचनात्मक दृष्टि से समझते हैं और अपने रचनात्मक माध्यम से समाज को जागरूक करने का प्रयास करते हैं।

भारतीय एकता और सांस्कृतिक समरसता: भूपेन हज़ारिका भारत की विविधता को एकता का आधार मानते हैं। पुस्तक में उनकी यह दृष्टि दिखाई देती है कि संगीत, भाषा और संस्कृति मनुष्यों को जोड़ सकते हैं। यही विचार उनके गीत “गंगा से ब्रह्मपुत्र” जैसी रचनाओं में परिलक्षित होता है।

यात्रा-सम्पर्क से प्राप्त जीवन-दर्शन: पुस्तक में जिन स्थानों पर वे गए, जिन लोगों से मिले, उनसे मिले अनुभवों ने उन्हें जीवन-दर्शन की गहरी समझ दी। पुस्तक में यह स्पष्ट है कि उनके गीतों के पीछे जीवन के यथार्थ अनुभव ही मुख्य स्रोत रहे हैं।

2.2 विंग्ड हॉर्स: असमिया गीत संग्रह

“विंग्ड हॉर्स : असमिया गीत संग्रह” भूपेन हज़ारिका के असमिया गीतों का एक महत्वपूर्ण चयनित संकलन है, जिसका उद्देश्य उनके गीत-साहित्य को वैश्विक पाठकों तक पहुँचाना है। इस पुस्तक में असमिया भाषा में लिखे गए उनके प्रमुख गीतों को संग्रहित किया गया है और कई गीतों का अंग्रेज़ी अनुवाद भी शामिल है। इससे गैर-असमिया पाठक भी भूपेन हज़ारिका की रचनात्मकता, संवेदनशीलता और सांस्कृतिक दृष्टि को समझ सकते हैं। यह संग्रह हज़ारिका के गीतों में मौजूद मानवीय मूल्य, सांस्कृतिक समरसता, सामाजिक संघर्ष, और पूर्वोत्तर भारत की क्षेत्रीय पहचान को अत्यंत सुंदर रूप में प्रस्तुत करता है। उनके गीतों में आम लोगों जैसे मजदूरों, नाविकों, किसानों, बुनकरों, जनजातीय समुदायों और श्रमिक वर्ग की पीड़ा, आशा और संघर्ष को जीवंत रूप दिया गया है। “विंग्ड हॉर्स” इन भावनाओं को एक ऐसे रूप में सामने लाता है, जहाँ पाठक उनकी रचनाएँ समझते ही नहीं, बल्कि अनुभव भी करते हैं।

पुस्तक का शीर्षक “विंग्ड हॉर्स” (पंखों वाला घोड़ा) प्रतीकात्मक है, जो भूपेन हज़ारिका की कल्पनाशीलता, कलात्मक उड़ान, और सांस्कृतिक संदेशों के व्यापक विस्तार का संकेत देता है। यह दर्शाता है कि उनके गीत भौगोलिक सीमाओं से परे उड़ान भरते हैं और समूचे मानव समाज से संवाद स्थापित करते हैं। संग्रह के गीतों में असम की प्रकृति, नदियों, लोकधुनों, जनजीवन और परंपराओं की समृद्ध झलक मिलती है। कई गीत सामाजिक असमानता, गरीबी, सांप्रदायिक सद्भाव और मानवाधिकार के मुद्दों पर केंद्रित हैं। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि यह भूपेन हज़ारिका के गीतों के काव्यात्मक सौंदर्य और सामाजिक संदेशों दोनों को एक साथ पकड़ती है। समग्र रूप से, “विंग्ड हॉर्स” भूपेन हज़ारिका के गीत-साहित्य की आत्मा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने वाला एक अद्वितीय संकलन है। यह संग्रह उनके कला-दर्शन, मानवतावादी दृष्टि और पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक पहचान को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत बनता है।

3. निष्कर्ष

भूपेन हज़ारिका का गीत-साहित्य भारतीय संगीत और संस्कृति की उस धारा का प्रतिनिधित्व करता है, जो मानवता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक विविधता को गहन संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त करता है। उनके गीत मात्र कलात्मक अभिव्यक्तियाँ नहीं, बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायित्व, मानवीय जुड़ाव और सामाजिक न्याय की पुकार हैं। उन्होंने अपने गीतों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि कला समाज को दिशा देने, लोगों को जोड़ने और सांस्कृतिक अस्मिता को सशक्त बनाने का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकती है।

उनकी रचनाओं में मानवीय मूल्य अत्यंत गहराई के साथ प्रकट होते हैं चाहे वह समानता का संदेश देने वाला “मानुष मानुषर जने” हो या सामाजिक पीड़ा और संघर्ष को उजागर करने वाली “बिस्ती पड़िसे” जैसी रचनाएँ। इसी प्रकार सांस्कृतिक एकता का विचार हज़ारिका के गीतों में सार्वभौमिक स्तर पर उभरता है। “गंगा से ब्रह्मपुत्र” जैसे गीत भारत की विविधताओं को जोड़ने वाली सांस्कृतिक पुल का कार्य करते हैं और यह दर्शाते हैं

कि विभिन्न भाषाओं, परंपराओं और समुदायों के बीच एकता ही सभ्यता की सबसे बड़ी शक्ति है। पूर्वोत्तर भारत की क्षेत्रीय पहचान को राष्ट्रीय परिदृश्य में स्थापित करने में भी भूपेन हज़ारिका का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने असम और पूर्वोत्तर के जनजीवन, प्रकृति, लोकधुनों, संघर्षों और सामाजिक यथार्थ को अपनी रचनाओं के माध्यम से देश और विश्व के सामने रखा। उनकी रचनाएँ न केवल क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को उजागर करती हैं, बल्कि उपेक्षित और हाशिये पर स्थित समुदायों की आवाज़ बनने का कार्य भी करती हैं। भूपेन हज़ारिका का गीत-साहित्य मानवीय संवेदनाओं, सांस्कृतिक समरसता और क्षेत्रीय पहचान का ऐसा त्रिवेणी-संगम है, जो भारतीय संगीत-परंपरा में अनूठा और अविस्मरणीय स्थान रखता है। उनका रचनात्मक अवदान यह सिद्ध करता है कि साहित्य एवं संगीत केवल सौंदर्य का माध्यम नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन की शक्ति भी हैं। इसलिए भूपेन हज़ारिका की रचनाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी अपने समय में थीं और भविष्य में भी मानवता, एकता और सांस्कृतिक चेतना को प्रेरित करती रहेंगी।

ग्रंथसूची

- भूपेन हज़ारिका. *डॉ. भूपेन हज़ारिका : गीत-समग्र*. गुवाहाटी: असम प्रकाशन परिषद.
- हज़ारिका, भूपेन. *मॉय एटी जाजाबोर*. गुवाहाटी: बाणी प्रकाशन.
- Hazarika, Bhupen. *Winged Horse: A Collection of Assamese Songs*. New Delhi: Sahitya Akademi.
- हज़ारिका, भूपेन. *Selected Songs and Writings*. गुवाहाटी: Asam Sahitya Sabha.

शोध-सहायक संदर्भ

- Sahitya Akademi. "Bhupen Hazarika: Life and Works."
- IGNCA (Indira Gandhi National Centre for the Arts). *Folk Music Traditions of Northeast India*.
- Encyclopaedia Britannica. "Bhupen Hazarika."